छत्रपति संभाजी नगर (औरंगाबाद) , महाराष्ट्र में माहेश्वरी समाज के लोगों के बीच माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

महान छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रपति संभाजी महाराज की पुण्यभूमि पर आप समाज बंधुओं के बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। आप सभी मेरे लिए अपने परिवार की तरह हो।

जब भी मैं राजस्थान या कहीं किसी दूसरे प्रदेश में जाता हूँ, और वहाँ अपने समाज के लोग मिलते हैं, तो मन बड़ा प्रसन्न हो जाता है। मुझे जानकर खुशी हुई कि छत्रपति संभाजी नगर में एयरपोर्ट के निकट यह समाज का सामूहिक महेश भवन बन रहा है। इसके लिए मैं समाज के सभी जनों को शुभकामनाएं देता हूँ।

माहेश्वरी समाज के लिए कहा जाता है कि राजस्थान से यह समाज आज देश – विदेश के कोने कोने में बसता है। और जहां भी समाज के लोग रहते हैं, वहाँ की आर्थिक-सामाजिक-सांस्कृतिक उन्नति में आगे बढ़कर योगदान देते हैं।

आप सब से मिलकर भी मुझे लग रहा है कि आपने इस मिट्टी के अनुरूप खुद को ढाल लिया है। यही हमारे समाज की बड़ी विशेषता है कि हम अपनी कर्मभूमि और जन्मभूमि का सम्मान करते हैं।

देश के कई प्रदेशों में, सम्पूर्ण महाराष्ट्र और छत्रपति संभाजी महाराज नगर में माहेश्वरी समाज के अनेक लोग रहते हैं। व्यापार से लेकर शिक्षा तक हर क्षेत्र में आज समाज के भाई-बंधु आगे बढ़कर माहेश्वरी समाज का नाम रोशन कर रहे हैं।

छत्रपति संभाजी नगर अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विरासत के साथ साथ, अपने आर्थिक विकास के लिए भी जाना जाता है। आज यह प्रदेश जिस तेज गति से विकास कर रहा है, इसमें समाज के सभी जनों का योगदान है।

आप सभी ने अपने-अपने कार्यों से इस नगर के लिए अपना कॉन्ट्रिब्यूशन दिया है। आपने इसे सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया है।

प्रिय बंधुओ और बहनो, हमारे समाज के लोग अपनी मेहनत अपने व्यवहार अपनी प्रतिभा और कौशल के लिए पूरे विश्व में जाने जाते हैं। हम जहां भी गए हैं, हमने उस स्थान

पर शिक्षा के, चिकित्सा के केंद्र बनाए हैं, वहाँ रोजगार के अवसर बनाए हैं, उस स्थान के विकास के लिए काम किया है। यह हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

आज हिंदुस्तान के हर प्रांत में और हिंदुस्तान से बाहर विदेशों में भी माहेश्वरी समाज को जाना जाता है। कड़ी मेहनत और समर्पण हमारा स्वभाव होता है। सभी प्रांतों की अर्थव्यवस्था में हमारा समाज महत्वपूर्ण योगदान देता है।

आज प्रतिस्पर्धा के साथ आगे बढ़ते युग में जो समाज आज भी अपनी संस्कृति और मूल्यों की बात करता है, वो समाज है माहेश्वरी समाज। सेवाभावी और मददगार लोग हमारे समाज के होते हैं, जो दूसरों के दुःख को बाँटते हैं। महाराजा अग्रसेन के सेवा और सरोकार के संदेश को हमने दुनिया भर में पहुंचाया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा था- "परहित सरिस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।" परोपकार से बड़ा कोई धर्म नहीं होता, और इस विचार को माहेश्वरी समाज के भाई-बहनों ने साकार किया है।

भारत की आज़ादी में और आज़ादी के बाद देश के विकास में माहेश्वरी समाज का बड़ा योगदान रहा है। माहेश्वरी समाज के कई दानवीरों ने, उद्योगपतियों और व्यापारियों ने भारत के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज सेवा जैसे सभी क्षेत्रों में माहेश्वरी समाज आगे रहा है।

हमें गर्व होना चाहिए कि माहेश्वरी समाज के लोगों ने देश के आज़ादी के आंदोलन में भी और स्वतंत्रता के बाद देश के विकास में भी अपनी अतुलनीय भूमिका निभाई है।

राजस्थान हो या देश का कोई भी प्रदेश हो, माहेश्वरी समाज के लोगों ने अपने परिश्रम से आज व्यापार के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाई है। हमने व्यापार के साथ सरोकार भी किए हैं। जितना यही कारण है कि देश के लगभग हर राज्य में आज समाज के लोगों को बड़े सम्मान से देखा जाता है।

समाज का युवा संगठन हो या महिला संगठन हो सभी मोर्चों पर समाज ने उल्लेखनीय काम किया है। महाराजा अग्रसेन और दानवीर भामाशाह की परंपरा का पालन करते हुए हमने नि:स्वार्थ सेवा और सरोकार के मानक स्थापित किए हैं।

मित्रों, कोई भी राष्ट्र हो या कोई भी समाज हो वही देश और समाज आगे बढ़ता है जिनमें आपस में सहयोग की भावना हो और जो प्रगतिशील यानी आगे बढ़ने की सोच रखते

हो। माहेश्वरी समाज के लोगों की सोच ऐसी रही है कि पर्याप्त परिश्रम कर अपनी उन्नति तो करें ही, साथ में देश की प्रगति में, देश की अर्थव्यवस्था में भी अपनी भूमिका निभाएं।

समाज के अधिकांश जन उद्योगपति और समाजसेवी वर्ग से आते हैं। देश में एक जागरूक और जिम्मेदार समाज होने के नाते यह हमारा दायित्व बनाता है कि हम अपने काम में विस्तार के साथ रोजगार सृजन पर भी ज़िम्मेदारी से ध्यान दें। अपनी पूरी क्षमता के साथ हम अपनी उन्नति करें, समाज को आगे बढ़ाएं और राष्ट्र की बेहतरी के लिए काम करें।

हमारे देश ने अभी पिछले वर्ष ही अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किए हैं। आज़ादी के इस 75वें वर्ष से 25 साल बाद आज़ादी की 100वीं वर्षगाँठ तक का समय देश के लिए अमृतकाल की तरह है, जब हम अपने समर्पण और परिश्रम से देश के विकास में नए आयाम विकसित कर सकते हैं, नए अध्याय जोड़ सकते हैं।

हमें विचार करना होगा कि अपने प्रयासों से हम अगले 25 वर्षों में भारत को किस ऊँचाई पर लेकर जाते हैं! आज़ादी के 75वें वर्ष से शताब्दी वर्ष की यात्रा का आगामी 25 वर्षों का समय हमारे राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

राष्ट्र और समाज की बेहतरी में इस समाज के जनों ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। आप संकल्प लीजिए कि देशहित में आपके कार्यों, आपकी भूमिका का और अधिक विस्तार हो। 2047 में जब हम अपनी आजादी की 100वीं वर्षगाँठ मनाए तो आपकी भूमिका उसमें प्रमुख रूप से परिलक्षित हो।

इसी संदेश के साथ समाज के सभी लोगों को मैं भविष्य के लिए अनेक शुभकामनाएं देता हूँ।

———